LIBRARY

School of Planning And Architecture ,Bhopal

S.No.39 (November 2024)

Electronic Media *08/11/2024*

एसपीए भोपाल में जलवायु अनुकूल निर्माण पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन

November 8, 2024 12:05 pm

Editor: ITDC News Team

सीएनएन सेंट्रल न्यूज़ एंड नेटवर्क–आईटीडीसी इंडिया ई प्रेस /आईटीडीसी न्यूज़ भोपाल: दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान, विभिन्न विषयों पर पैनल चर्चा के छह सत्र आयोजित किए गए। पद्मश्री महेश शर्मा, पर्यावरण संरक्षणवादी और सामाजिक कार्यकर्ता ने झाबुआ, मध्य प्रदेश में एक समुदाय संचालित पहल "शिव गंगा" आंदोलन पर चर्चा की, जो वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और वनीकरण के माध्यम से जल संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है। जिसने सफलतापूर्वक स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित किया है और कृषि उत्पादकता में सुधार करके प्रवासन को कम किया है।

पद्मश्री जनक पलटा मैकगिलिगन, संस्थापक-निदेशक, जिमी मैकगिलिगन सेंटर फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट, इंदौर ने सतत जीवन के व्यावहारिक मॉडल पर चर्चा की, जिसमें दिखाया गया कि कैसे विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग, जैविक खेती और स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं।

निदेशक प्रसाद देवधर, भागीरथ ग्राम विकास पार्थिस्थान, गोवा के संस्थापक ने ऊर्जा और स्वच्छता के लिए बायोगैस का उपयोग करने, एलपीजी पर निर्भरता कम करने और खुली आग में खाना पकाने से होने वाले हानिकारक उत्सर्जन को नियंत्रित कर स्वास्थ्य में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित किया। निदेशक एस. विश्वनाथ, बायोम एनवायर्नमेंटल ट्रस्ट, वाटर विजडम, बेंगलुरु ने पारंपरिक वाटरशेड पारिस्थितिकी तंत्र, वर्तमान और भविष्य के शहरी और ग्रामीण जल प्रबंधन में उनकी भूमिका से अवगत किया। उन्होंने पेयजल सुरक्षा के लिए भूजल पुनर्भरण, झीलों और कुओं सफाई, गाद उत्सव और महिलाओं के नेतृत्व वाली टैंक सफाई जैसी सांस्कृतिक प्रथाओं पर प्रकाश डाला। प्रो. चित्ररेखा काबरे, प्रोफेसर, वास्तुकला विभाग, एसपीए दिल्ली ने जलवायु चुनौतियों के समाधान के रूप में पुनर्योजी डिजाइन और बायोसेंट्रिक दृष्टिकोण की खोज की। उन्होंने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और पर्यावरणीय प्रभावों से निपटने में स्वदेशी वास्तुकला की भूमिका पर जोर दिया।

सुश्री सुरभि तोमर, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि ने जैसलमेर में घरों और स्कूलों का उदाहरण देते हुए भवन निर्माण और संचालन में ऊर्जा के उपयोग पर चर्चा शुरू की। उन्होंने निर्माण सामग्री के रूप में बांस के उपयोग पर भी जोर दिया, क्योंकि इसमें स्टील की जगह लेने की क्षमता है। उन्होंने नॉर्वेजियन लकड़ी की ऊंची इमारतों का भी हवाला दिया और बताया कि उन्हें स्थानीय संशोधनों के साथ कैसे दोहराया जा सकता है।आर्किटेक्ट. हबीब खान, अध्यक्ष, शाषी मण्डल, एसपीए दिल्ली ने सतत विकास, प्रकृति के साथ परस्पर निर्भरता और मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने आध्यात्मिकता और पर्यावरण मनोविज्ञान, समुदायों के प्रति सम्मान, जलवायु और प्रकृति के संयोजन वाले एक दर्शन का वर्णन किया । "मैं पृथ्वी पर एक आगंतुक हूं" जैसी धारणाओं ने उनके भाषण के सार पर प्रकाश डाला।

सुश्री आर्य चावड़ा, लेखिका, चित्रकार, वक्ता, पर्यावरण कार्यकर्ता, अहमदाबाद ने पर्यावरण मनोविज्ञान पर सामुदायिक भागीदारी के साथ युवा नेतृत्व वाले स्थानीय समाधानों पर जोर दिया। निदेशक बिनीशा पायट्टाती, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वेस्ट मैनेजमेंट, बेंगलुरु की कार्यकारी निदेशक ने रीसाइक्लिंग और प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान दे

ने के साथ सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण पहलुओं के रूप में सर्कुलर इकोनॉमी और रीसाइक्लिंग पर चर्चा की। उन्होंने भोपाल और हैदराबाद के अपशिष्ट से सीएनजी संयंत्रों का केस अध्ययन

प्रस्तुत किया। आर्किटेक्ट संदीप विरमानी, निदेशक हुनरशाला, भुज ने भवन निर्माण में स्थानीय सामग्रियों के उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने भूटान, बिहार के बाढ़ प्रभावित मिथलांचल क्षेत्र, भूकंप प्रभावित राज्य गुजरात और मुजफ्फरनगर से संबंधित अपने अनुभव साझा किए।

आर्किटेक्ट अमोघ कुमार गुप्ता, अध्यक्ष, शाषी मण्डल, एसपीए विजयवाड़ा ने वास्तुकला पाठ्यक्रम में वास्तु को शामिल करने पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने कहा कि आदर्श विकास शोषण-केंद्रित नहीं होना चाहिए और वास्तुकला और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अनुभवात्मक शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। आर्किटेक्ट लोकेंद्र बालासरिया, प्रैक्टिसिंग अर्बन इकोलॉजिस्ट, अहमदाबाद ने गुजरात के मेट्रो शहरों में डीजल से चलने वाली कारों से कार्बन उत्सर्जन, मच्छर निरोधक जैसे रोजमर्रा के उत्पादों में न्यूरोटॉक्सिन और शहरी जल सुरक्षा सुनिश्चित करने में वर्षा जल संचयन की भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए काम किया है। निदेशक अंशू शर्मा, पार्टनर एसटीएस ग्लोबल, सह-संस्थापक सीड्स ने सामुदायिक पहल के लिए स्वदेशी प्रथाओं और ज्ञान की बात की। निदेशक राजन कोटरू, मुख्य तकनीकी सलाहकार, इंडो-जर्मन कार्यक्रम, ने पारंपरिक प्रथाओं के माध्यम से हिमालय क्षेत्र में बहु-हितधारक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया। आर्किटेक्ट कृति ढींगरा, प्रिंसिपल आर्किटेक्ट, संश्रया डिज़ाइन स्टूडियो, धर्मशाला ने स्थानीय वास्तुकला के लिए मिटटी और जैविक सामग्री से बनी निर्माण सामग्री की जानकारी साझा की। धर्मेश जड़ेजा, संस्थापक, कार्यकारी, ड्यूस्टूडियो, ऑरोविले ने डिजाइन और वास्तुकला के माध्यम से आवासों के कायाकल्प पर बात की। आर्किटेक्ट संजीव शंकर ने समुदायों के साथ काम करने पर अपने अनुभव साझा किए।

निदेशक गोपाल आर्य, राष्ट्रीय संयोजक, पर्यावरण संरक्षण गतिविधि, समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे और प्रो. कैलासा राव, निदेशक एसपीए भोपाल ने सम्मेलन की सिफारिशों पर चर्चा की। सम्मेलन समन्वयक प्रो. रमा उमेश पांडे ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

#एसपीएभोपाल #जलवायुअनुकूलनिर्माण #सततजीवनशैली #राष्ट्रीयसम्मेलन #पर्यावरण